सत्संग परमसंत हुजूर
पुष्कर दयाल जी महाराज
(ग्राम–सोलडा दिनांक 24 जनवरी 2016)

!!राधा–स्वामी!!

मृत्यु क्या है? मृत्यु को एक बार समझना पडेगा। जिसने मृत्यु को समझ लिया उसने मृत्यु के ऊपर काबू पा लिया, फिर उसको मृत्यु कुछ नही कर सकती। लेकिन बात है समझने की, इसका मतलब यह नही है कि वो हमेशा के लिए अमर हो गया। मृत्यु के ऊपर काबू पाने का मतलब है, वो जब चाहे मृत्यु को बुला सकता है, आओ मुझे ले जाओ, इसको बोलते हैं मृत्यु पर काबू करना। ये कोई किताबी बात नही है। ये हमारे गुरू जी के साथ हुआ है। हमारे गुरू जी थे, वो बिल्कुल ठीक थे, जब वो 82 साल के थे, तो उन्होने खुद ही बताया कि मेरी आयु 96 बर्ष है। लेकिन 86 साल में ही उन्होने चोला छोड दिया। क्यों? क्योंकि उन्होने मृत्यु को काबू कर लिया था। मृत्यु उनके हाथ में थी। वो जब चाहे मृत्यु को बुला सकते थे। उनके शरीर ने साथ नही दिया और अचानक उनको खून की टट्टियाँ लगने लगी गई। ये सब कर्मों का हिसाब होता है, ये जो संत होते हैं, वो लोगों के कर्म ले लेते हैं, फिर उनको भुगतना पडता है। हम जो कर्म करते हैं, ये कर्म हमारे खत्म नही होते। एक बार कर्म बन गया उसको भुगतना ही भुगतना है। अगर हम नही भुगते तो कोई और भुगतेगा, कौन भुगतेगा? जो आपके कर्म उठायेगा। आपके कर्म कौन उठाता है? आपके कर्म आपका गुरू उठाता है, फिर गुरू को भगुतना पडता है। ये कोई किताबी ज्ञान नही बता रहा हूँ, ये मैं अपना अनुभव बता रहा हूँ। आज से 2 साल पहले मेरे Heart ने काम करना छोड दिया। वो Inlarge हो गया, मेरी Puls Rate 60 से 120 हो गई और Heart से बिना ऑक्सीजन के खून निकलने लगा। जब मैं डॉक्टर के पास गया तो डॉक्टर ने कहा– आपकी उम्र सिर्फ एक महीना है। तो मैंने पूछा– क्या करना चाहिए? कहने लगा– आपको Risk लेना पडेगा, अगर आप Risk लेते हो तो आप 99% चांस है आप बच जाओगे। अगर आप Risk नही लेंगे तो आपकी 1 महीने में मृत्यु हो जाएगी। तो मैंने Risk ले लिया और मैं बच गया। फिर मैं सोच रहा था कि ऐसा मेरे साथ कयों हुआ? फिर मेरे गुरू की एक शिष्या हैं, वो भी बहुत पहुँची हुई हैं। तो मैंने उनसे कुछ नही कहा, लेकिन जब उन्होने सुना कि मेरे Heart में ये Problem हो गई है, तो उन्होने खुद ही मुझे कहा–कि आपने किसी औरत की जान बचाई है। उस औरत के गले में कैंसर हो गया था, आपने उसके कर्म अपने ऊपर ले लिए। वो बच गई और आपके Heart में Problem हो गई, तो गुरू हमारे कर्म उठाता है। एक बार हम गुरू की शरण में जाते हैं, तो फिर हम कहते हैं– गुरू मिला फिर क्या कमाना। गुरू आपके लिए जान देने को तैयार हो जाता है। जब आप गुरू के समर्पित हो जाते हैं, तो गुरू आपके लिए जान देने को भी तैयार हो जाता है।

बात शुरू हो गई थी, मृत्यु क्या चीज है? हमारे गुरू ने बताया कि उनकी उम्र 96 बर्ष है, लेकिन 86 बर्ष की उम्र में ही उन्होने चोला छोड दिया। उनको पता लग गया कि मेरा शरीर अब मेरा साथ नही दे रहा है। अगर मैं और जीऊंगा, तो मैं बिस्तर पर पड़ जाऊंगा, और मेरी सेवा करनी पडेगी। और मैं नही चाहता कोई मेरी सेवा करे। तो उन्होने क्या किया? एक दिन शाम को अपने सारे परिवार वालों को बुलाया और बोले– आज शुबह 4 बजे, मैं चला जाऊंगा। सब परेशान हो गए, परिवार वाले बोले आप क्यों जा रहे हें? तो वो बोले– मुझे अब नही रहना है इस संसार में। उन्होने कहा– तुम शब्द पढना शुरू करो, शब्द पढना शुरू किया तो 2 बजे उनहोने पूछा– Time क्या हुआ है? हमने कहा–2 बजे हैं। अच्छा चलो अभी और शब्द पढो। फिर उन्होने 3 बजे पूछा, Time क्या हुआ है? हमने कहा 3 बजे हैं। तो उन्होने कहा– चलो शब्द पढो। फिर उन्होने 4 बजे पूछा Time क्या हुआ है? हमने कहा 4 बजे हैं। तो उन्होने कहा– शब्द बंद करो और मेरे लिए पानी

लाओ। तो कोई गया उनके लिए पानी लाने, तो उन्होने पानी भी नही पिया और चोला छोड दिया। खुद अपनी इच्छा से उन्होने चोला छोड दिया। इसका मतलब क्या हुआ? इसका मतलब हुआ कि मृत्यु कोई बुरी चीज नही है। मृत्यु को हम गलत समझते हैं, इसलिए इससे डरते हैं। हमें ज्ञान नही है, मृत्यु क्या चीज है? इसलिए हम इससे डरते हैं। अगर इस संसार में कोई अच्छी चीज है, वो है मृत्यु। लेकिन हम समझ नही पा रहे हैं, मृत्यु क्या है? जैसे हम कपडे बदलते हैं, बस वही है मृत्यु। हमारी आत्मा कपडे बदलती है, यही है मृत्यु। आज यहाँ, कल वहाँ और परसों वहाँ, यही है मृत्यु। लेकिन हम क्यों डरते हैं इससे? कोई जवान औरत है, उसके 2–3 बच्चे हैं, और उसका पति Accident में मर जाता है। तो हम रोने लग जाते है, अब क्या होगा बेचारी का। लेकिन आप ख्याल करो, आज तक कितनी जवान लडकियाँ, जिनके छोटे–छोटे बच्चे हैं, विधवा हो गईं हैं। क्या उनके बच्चे पले नही? उनके बच्चे भी पल गए और उनके सारे काम भी हो गए। लेकिन हमारे अंदर भय है कि औरत है, इसके छोटे बच्चे हैं, इनका क्या होगा? अरे जिसने उसका पति ले लिया, क्या उसने सोचा नही कि इसके छोटे बच्चे हैं, इनका क्या होगा? उसने पहले से ही इंतजाम कर दिया, फिर उसके पति को ले जाता है। आप ये मत समझो ये सारा कारोबार ऐसे ही चल रहा है, इसको कोई चलाने वाला है, हमारे हाथ में कुछ भी नही है। सबकुछ मालिक की मरजी से हो रहा है। हमारे दो Standard हैं मृत्यु के। जब किसी औरत का पति बीमार हो जाता है, और वो लाईलाज हो जाता है, खाट पर पडा रहता है, तो वो औरत खुद भगवान से प्रार्थना करती है। हे–भगवान अब इसको उठा लो। उस टाईम वो क्यों नही डरती है मृत्यु से, उस टाईम कहाँ गया उसका मृत्यु का भय? इसका मतलब हम दोगले हैं। हमारे दिमाग में दो चीजें हैं, मृत्यु का भय भी है और हम मृत्यु को समझते भी हैं, हाँ मृत्यु अच्छी चीज है। इस संसार में अगर सबसे अच्छी चीज कोई है, तो वो है मृत्यु। क्यों? इस संसार में क्या है? हम इस संसार में किसलिए आए हैं? क्या हम इस संसार में इसलिए आए हैं कि पढें लिखें, नौकरी करें, शादी करें और बच्चे बनाएं? नही हम इस संसार में इसलिए नही आए हैं। मनुष्य जन्म सबसे उत्तम जन्म है, ओर ये उत्तम जन्म इसलिए है कि मनुष्य जन्म में ही मोक्ष है। ना पशु जन्म में मोक्ष है, ना देवता जन्म में मोक्ष है। मोक्ष अगर है तो इसी मनुष्य जन्म में है। मोक्ष क्या होता है? मोक्ष है इस जन्म मरण की चक्की से छुटकारा। मरते हैं जीते है, फिर मरते हैं और फिर जीते हैं, हजारों लाखों बार हम जीयें हैं और मरे हैं। हमने हजारों लाखों जन्म में क्या किया? वही पापड बेल रहे हैं, कुछ नही किया हमने। लेकिन ये जन्म क्यों मिला हमको? पहले ये समझना है, ये जन्म मिला हमको, हमें अपने घर वापिस जाना है। ये संसार हमारा घर नही है, हम यहाँ सफर में हैं। मरते हैं जीते हैं, और फिर मरते हैं और फिर जीते हैं। और हर जन्म में हम क्या करते हैं? बच्चे बनाए, उनकी शादियाँ करी, बुडडे हो गए और मर गए। बस यही किया हमने, लेकिन ये जन्म इसलिए नही है। हमारा जन्म इसलिए है कि हमको मोक्ष चाहिए। मोक्ष का मतलब हमें फिर से जन्म नही लेना है संसार में। संसार में क्या है? संसार में रोग हैं, गरीबी है, बेरोजगारी है, खून खराबा है, क्या इस संसार में जीना अच्छा है? क्या इस संसार में जीने में मजा आता है? नही आता है। अगर हमसे कोई कहे, नही जी यही संसार है। फिर तो हम बैठे रहेंगे इसी संसार में और इस संसार के रोग, बेरोजगारी, दुख झेलते रहेंगे, यहाँ के कष्ट भी झेलेंगे। नही, ऐसा नही है। फिर क्या होता है? फिर गुरू आता है हमारी जिंदगी में, गुरू कहता है7 भैया इस संसार से अलग एक और संसार है। वहाँ ना रोग, ना बेरोजगारी है, ना पेट है, ना भूख है, ना भाषा के ऊपर काट मार है। वहाँ आनंद ही आनंद है, वहाँ परमसुख है। गुरू कहता है–ऐसी जगह है और उस जगह का पता जानता हूँ। क्या तुम चलोगे मेरे साथ? वहाँ परम आनंद है। वहाँ ना आपको ठण्ड लगेगी, ना गर्मी लगेगी, ना कोई रोग लगेगा शरीर में। जिसको बात समझ में आती है, वो कहता है गुरू जी में चलूंगा आपके साथ। लेकिन जिसकी समझ में नही आती है बात। नारद जी ने एक सूअर को कहा तुम स्वर्ग चलोगे? तो सूअर ने कहा वहाँ विष्ठा मिलेगी? नारद जी ने माथा पीट

लिया, तू बैठ, तेरे लिए संसार ही ठीक है। तो जिसकी समझ में आ गई, हाँ ये संसार रहने की जगह नही है। इस संसार से अलग एक और संसार है, जहाँ सुख ही सुख है, परम आनंद है। तो वो गुरू जी से कहता है हाँ गुरू जी मैं जाने को तैयार हूँ, मुझे ले चलो अपने साथ। फिर गुरू जी उसका हाथ पकड लेता है, और अपने साथ ले जाता है। एक बार गुरू जी ने हाथ पकड लिया, फिर वो हाथ नही छोडता है। शर्त यह है कि गुरू हाथ पकडना चाहिए।

मृत्यु क्या चीज है? मृत्यु है जैसे हम कपडे बदलते हैं, हमारी आत्मा भी कपडे बदलती है। क्या आप समझते हैं जो मेरी माँ है, मेरा बाप है, मेरी पत्नी है, मेरा पति है, मेरा बेटा है, ये रिश्ते हैं। कोई रिश्ता नही है। ये सब हमारे पिछले जन्मों के प्रारब्ध कर्मों के लेन–देन के रिश्ते हैं। उन्ही रिश्तों को हम पूरा करने आए हैं, और जब लेन देन का रिश्ता पूरा हो गया, फिर सब खत्म। फिर ना मेरा कोई बाप है, ना मेरी कोई बीबी है, ना मेरा कोई बेटा है। उसी टाईम छोडकर चला जाता है। मेरी बीबी थी मुझसे बहुत प्रेम करती थी। मैं सोचता था हमेशा मेरे साथ रहेगी। लेकिन एक दिन छोडकर गई मुझको। तो मेरी खोपडी में बात गई, ये संसार का रिश्ता सब झूठा है, इस संसार के रिश्ते में मत पडो। ठीक है संसार में आए हो, बच्चे आए हैं, वो प्रारब्ध कर्म हैं आपके। अगर आपने किसी से पैसे लिए हों और वो वापिस नही किए हों, तो इस जन्म में वो तुम्हारी लडकी बनकर आएगी और सारा वसूल कर लेगी। तो इसका मतलब यह नही कि तुम अपनी लडकी को उठाकर बाहर फेंक दोगे। वो आपकी लडकी है और प्रारब्ध कर्मों के हिसाब से आई है, तो आपको उसके साथ कर्मों का लेन–देन पूरा करना ही पडेगा। अगर आपने नही किया तो आपके कर्मों का लेन देन और बढ गया। तो इस संसार में जो भी रिश्ते हैं हमारे, हमें उनको पूरा करना है। बच्चों को पढाना है, लिखाना है, उनके घर बसाने हैं, सब कुछ करना है। लेकिन मन में बात रखनी है ये मेरा बेटा नही है, किसी भी टाईम उठा कर ले जाएगा, क्योंकि वो मेरा बेटा नही है, मेरी बेटी नही है। पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब से वो मेरे पास आया, जब वो लेन देन का रिश्ता पूरा हो जाएगा, सब खत्म।

मेरा छोटा बेटा है। आज से 2 साल पहले की बात है, मेरा बेटा अपनी बीबी से बहुत प्यार करता था, और उसकी बीबी भी उससे बहुत प्यार करती थी। एक दिन उसकी बीबी को अचानक बहुत तेज ठण्ड चढ गई। तो बेटे ने उसको Crocin की Teblet दे दी, लेकिन कुछ फायदा नही हुआ। वो बोली मुझे Bathroom जाना है। तो मेरा बेटा उसको उठाकर ले गया और Pot पर बिठा दिया। जब उसको Pot पर बिठाया तो उसको उल्टी आ गई। बेटा उसको उठाकर Bed पर ले आया। तो बेटा उसको पूछ रहा है, कैसी हो? तो उसने जबाब दिया मैं सोना चाहती हूँ, और दम तोड दिया। अब सोचो कितना प्यार करती थी वो अपने पति से। लेकिन जाने के टाईम उसने जरा सी भी नही सोचा, कि मेरा पति है, मैं इसे छोडकर क्यों जाऊँ? आँखें बंद की और चली गई। ये हैं हमारे संसार के रिश्ते, जब लेन देन पूरा हो जाता है, फिर ना तू कौन और ना मैं कौन? छुट्टी और चला गया। सबके साथ ऐसा ही होता है, आप किसी से भी पूछो। जब उसका समय आता है, तो ना तू मेरा बेटा, ना तू मेरा बाप, ना तू मेरी पत्नी है, छोडकर गया और खत्म। तो ये संसार के रिश्ते सब ऐसे ही हैं, सब झूठ हैं। सच क्या है? सच एक मालिक है। वो ही हमारे साथ रहने वाला है, उसी को पकडो, तुम सुखी हो जाओगे। संसार के रिश्तों को पकडोगे, तो कुछ नही होने वाला। फिर से जन्म, फिर से मरण। मालिक को पकडो, वो कह देगा तुम्हारी जन्म–मरण से छुटटी। छोडो इस संसार को, ये संसार क्या है? ये संसार कीचड है। यहाँ कीचड ही कीचड है। कोई खुश नही है, इस संसार में कोई सुखी नही है। इस संसार में जितने मनुष्य हैं, उतने ही प्रकार के रोग हैं। गुरू नानक ने कहा है–

नानक दुखिया सब संसार।

कबीर साहब कहते हैं–

तन धर सुखिया कोई ना देखा।

इस इंसानी चोले में किसी को सुखी नही देखा। तो जब इतने बडे–2 महापुरूष कहते हैं कि यहाँ कोई सुखी नही है, तो हत कहाँ से सुखी रहेंगे? हम भी तो दुखी हैं। तो फिर क्यों रहें इस संसार में? छुटटी करो संसार से और चलो अपने देश वापिस जहाँ से हम आए हैं। हम कैसे जाएंगे? जब गुरू हाथ पकडेगा और वो अपने साथ ले जाएगा। इसलिए कबीर साहब कहते हैं–

सतगुरू खोजो रे भाई, जगत में दुर्लभ रतन यही है।

अगर इस संसार में कोई दुर्लभ चीज है, वो है गुरू। सच्चा गुरू। एक सच्चा गुरू जो होता है, उसे हमेशा ईच्छा रहती है कि मैं अपने भोले भाले सत्संगियों को अपने साथ अपने वतन ले जाऊँ। इनके दुख दूर करूँ, इनके कष्ट दूर करूँ, और इनको अपने साथ ले जाऊँ अपने धाम।

!! राधा स्वामी !!